**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 133-135**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

# बिहार राज्य में पर्यटन उद्योग विकास एवं सम्भावनायें : बोधगया एवं नालंदा के विशष संदर्भ में

**डॉ0 सुरेन्द्र चौधरी**

एम० ए०, पी–एच० डी०, भूगोल विभाग, मगध विश्व विधालय, बोधगया (बिहार) भारत

**Received-16.11.2024, Revised-23.11.2024, Accepted-23.11.2024** **E-mail : surendrachaudhary597@gmail.com**

***सारांशः पर्यटन मुख्यतः अर्थशास्त्र से संबंधित शब्द है, जो कि उद्योग का द्योतक है। यह एक आर्थिक सामाजिक शब्द हैं। अन्य आर्थिक क्रियाओं के तरह इससे माँग की उत्पति होती हैं तथा अन्य उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करती है। यह उद्योगों का उद्योग है। पर्यटन शब्द के अन्तर्गत समस्त व्यापारिक क्रियाएँ सम्मिलित है जो यात्रियों की आवश्यकता की पूर्ति करती है। पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा एवं सबसे तीव्र गति से विस्तार करने वाला उद्योग है। इसके विस्तृत बाजार का सीमांकन नहीं किया जा सकता । चुनाईट चौम्बर्स ऑफ कामर्स के अनुसार किसी भी क्षेत्रीय, प्रान्तीय या सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लिए पर्यटन की उन्नति एक मुख्य संचालक है। पर्यटन का विकास पिछले 30 वर्षों से अती तीव्र गति से हो रही है। ऐतिहासिक–सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्रों का महत्व पर्यटन के रुप में अत्यधिक हैं क्योंकि एक सर्वे के अनुसार आज 54 प्रतिशत पर्यटन इसे देखने आते हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– पर्यटन उद्योग विकास, आर्थिक क्रियाओं, विस्तृत बाजार, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, पर्यटन, सांस्कृतिक सम्पदा***

बिहार के इतिहास अति प्राचीन है और इसकी सांस्कृतिक सम्पदा अत्यंन्त समृद्ध हैं। प्राचीन काल में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ बिहार में घटी और विराट साम्राज्यों का निर्माण हुआ। बौद्धधर्म एवं जैन धर्म के उत्पति स्थान और सिक्खों के अन्तिम गुरू की जन्म भूमि भूमि बिहार में है।प्राचीन और मध्य काल में यह शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है।इन प्रस्थितियों में यह स्वभाविक है कि बिहार के क्षेत्र में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का बाहुल्य है। ये केन्द्र पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं। इन्ही में से कुछ महत्वपूर्ण स्थलों का विवरण निम्नलिखित है:

भारत का मुकुट मणि है, "बिहार" अक्सर यह कहा जाता है कि बिहार भारत का मुकुट मणि है। ऐतिहासिक रूप से यह संपुष्ट तथ्य है कि बिहार का ऐतिहासिक और उनकी परंपराएं मानव सभ्यता के समृद्ध राज्य विदेह, वैशाली, अंग और मगध बिहार में ही थे। कोई भी काल रहा हो बिहार का प्रताप इतिहास के पन्नों में स्वर्णक्षरों में अंकित है। बिहार का अतीत गौरवशाली रहा है। ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, कला–संस्कृति आदि क्षेत्रों में बिहार का योगदान अविस्मरणीय रहा है। हमारी सांस्कृतिक विरासत हमारी पूंजी है।सांस्कृतिक धरोहरों को पर्यटन की दृष्टि से और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाये जाने की योजना पर काम भी आरंभ हुआ है।

बिहार भगवान बुद्ध महावीर और गुरू गोविन्द सिंह जैसे अहिंसा, कर्म, त्याग और देश प्रेम के महान संदेशवाहकों की जन्मस्थली रही है। यह प्रदेश संत, मुनियों, दार्शनिकों और भाषाविदों का केन्द्र रहा है। सेवानिवृत प्रधानाध्यापक डॉ० दिनानाथ शरण के शब्दों में यह वही बिहार है जिसने पहली बार धर्म की और अध्यात्म की ज्योति से सारे जग को आलोकित किया।बौद्धधर्म ने सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया और पहली बार समाज में ऊँच–नीच के सामाजिक भेद–भाव को दुत्कारा। डॉ० शरण कहते हैं। सामाजिक न्याय का नारा चाहे आज भले नया हो परंतु सामाजिक विषमता को दूर करते हुए मानव मात्र को कल्याण करने का धर्म यहीं से शुरू हुआ और उसने देश–विदेश में लोकप्रियता पायी। जैन धर्म इन्हीं आदर्शों से अनुप्रभावित होकर चला। इसी बिहार भूमि से गुरुनानक आदि अन्य महात्माओं ने मानव–प्रेम, भू चिन्ता, हिंसा जून 2010 का संदेश फैलाया।सिखों के दसवें तथा अंतिम गुरु गुरुगोविन्द सिंह की जन्म् भूमि का गौरव भी इस बिहार को प्राप्त है।

बोधगया स्थित महाबोधी मंदिर निरंजना नदी के तट पर है। यही बोधिवृक्ष के नीचे तपस्यारत सिद्वार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और वे गौतम बुद्ध के नाम से विश्वविख्यात हुए। दक्षिण पूर्व एशिया के हजारों लाखों पर्यटक यहाँ प्रतिवर्ष आया करते है। बौद्धधर्म का उद्भव यहीं हुआ था।

विश्व मानचित्र पर अहम् मुकाम हासिल करने वाला अंतर्राष्टीय पर्यटक स्थल बोधगया देशी विदेशी सैलानियों को अब ज्यादा आकर्षित करने लगा है। यहां के विभिन्न कला–संस्कृति के तहत निर्मित मनमोहक बौद्ध, महावीर के साथ साथ राजकुमार सिद्धार्थ के तपस्या की भूमि प्रागबोधि गुफा (दुंगेश्वरी) की वादीयों में सैर–सपाटे के साथ–साथ पूर्जा–अर्चना के लिये आने वाले सैलानियों की संख्या में हर साल भारी बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। खास यह है कि गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पर थाईलैंड, श्रीलंका, भूटान, म्यामांर जैसे देशों में नियमित विमान सेवा प्रारंभ होने और सिंगापुर के चार्टर विमानो के आगमन से बोधगया बौद्ध परिपथ भ्रमंण का केन्द्र बन गया है। उपरोक्त देशों से आगत बौद्धश्रद्धालु अब सर्वप्रथम् राजकुमार सिद्धार्थ के बुद्धत्व प्राप्ति की भूमि नमन कर अन्य बौद्धस्थलों के परिभ्रमण पर जाते हैं।यहां अत्यधिक गर्मी पड़ने व अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पर विमानों का परिचालन बंद होने पर ही ऑफ सीजन का एहसास होता है। वर्ष 2012 में विदेशी पर्यटकों की रिकार्ड भीड़ बुद्धभूमी पर जुटी।2012 में एक लाख चौहतर हजार चार सौ सैतीस (1,74,437/–) पर्यटकों ने बुद्ध भूमि को नमन किया। वही 2013 में दस लाख इकतालीस हजार पाँच सौ बेआलीस (10,41,542/–) देशी पर्यटक भी बोध गया पहुँचे।आने वाले पर्यटकों की संख्या में इजाफा देख नई दिल्ली व वाराणसी में संचालीत बड़ी–बड़ी ट्रेवेल्स ऐजेंसी का भी बोधगया में शाखा कार्यालय खुला है। जो प्रर्यटकों को बौध परिपथ भ्रमण के लिए वातानुकूलीत वाहन से लेकर होटल में ठहराव सहित अन्य सुविधा मुहैया कर रही है। आगत पर्यटकों के लिए अब ऑनलाईन बुकिंग प्रणाली पर्यटन व्यवसाय को गति देने में मद्दगार साबित हुई है।बोधगया पर्यटन सूचना केन्द्र के ऑकड़े बताते हैं कि ऐतिहासिक धरोहर महाबोधि मंदिर को यूनेस्को द्वारा विश्रावदाय धरोहर की सूची में शामील किये जाने के पश्चात् हर साल यहाँ सैलानियों की संख्या में बढ़ोतरी दर्ज की

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

गयी हैं। कभी हजारों पहुँचने वाले सैलानीयों की संख्या अब लाखों को आकड़ों को छू रही है। वैसे बोधगया आने वाले विदेशी पर्यटकों से संबंधित प्राप्त आकड़ों में उतार–चढ़ाव भी देखने को मिलता है।होटल एसोसिएशन के महासचिव बताते है कि विदेशी पर्यटकों की संख्या में इजाफा से होटल व्यवसाय के लिए शुभ संकेत है। सरकार को यहां विदेशी पर्यटकों को ज्यादा दिन तहराव सुनिश्चित कराने के लिए आसपास के बौद्धस्थलों को विकसित करना होगा।हालांकि जनवरी 2009 के अंतिम सप्ताह में सूबे के मुख्यमंत्री बोधगया प्रवास कर उपेक्षित ऐतिहासिक बौद्धव सनातक स्थलों का दौरा कर निरीक्षण किया हैं। सरकार के पास ऐसे स्थलों को सुदृढ करने की योजना है। ट्रेवल्स ऐजेट बताते है कि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के उद्घाटन के पूर्व बोधगया विदेशी पर्यटकों ने अन्य बौद्धपरिपथ का भ्रमण करने आते थे। अब वैसा नहीं है। अब बोध गया से बौद्धपरिपथ कर यात्रा की शुरूआत करते हैं।

**तालिका –1**

**बोधगया में विदेशी सैलानियों (Tourists) का आगमन की प्रगति –2012–2021**

| क्र० सं० | वर्ष | कुल सैलानियों का आगमन |
|---|---|---|
| 1. | 2012 | 29,761 |
| 2. | 2013 | 30,061 |
| 3. | 2014 | 65,270 |
| 4. | 2015 | 25,929 |
| 5. | 2016 | 17,045 |
| 6. | 2017 | 37,001 |
| 7. | 2018 | 52,917 |
| 8. | 2019 | 1,20,431 |
| 9. | 2020 | 87,502 |
| 10. | 2021 | 1,74,437 |
| 11. | 2022–2023 | ––– |

**स्त्रोतः** टुरिस्ट इन्फोर्मेशन ऑफिस, बोधगया

बिहार विधा, धर्म और कला का स्थान रहा है। नालंदा विक्रमशीला व उदतपुरी के विश्वविधालयों और मिथिला के संस्कृत प्रतिष्ठानों में विज्ञान, दर्शन, भाषाशास्त्र, साहित्य, आयुर्वेद, तंत्र और अन्य विषयों के ज्ञानार्जन के लिए बाहर से विधार्थी आते थे। महान खगोलशास्त्रीय आर्यभट का प्रादुर्भाव भी बिहार में ही हुआ। विश्व के यह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह घोषणा की थी कि पृथ्वी गोल है। उन्होंने यह भी सिद्ध किया था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।

बिहार की संस्कृतिक धरोहरों में प्राचीन नालंदा विश्वविधालय का महत्वपूर्ण स्थान है। नालंदा विश्वविधालय की प्रसिद्धि का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इनकी चुना तुल्य मध्ययुग में फ्रांस के श्क्लूनी और क्लेयरपांम्स से की जाती हैं। नालंदा से प्राप्त अवशेषों को देखकर उत्खन्नकर्ता कर्निधम ने लिखा था यहां पायी गयी शिल्पकला समस्त भारत में प्राप्त काल से सुन्दर है। नालंदा विश्वविधालय में दस हजार विधार्थी पढ़ते थे और 1510 आचार्य थे। कोरिया, तिब्बत, थाईलैंड, तथा समस्त पूर्वी द्वीप समूहों के विधार्थी ज्ञानार्जन के लिए यहां आते थे। नालंदा विश्वविधालय में स्थान सिमित था और प्रवेश को इच्छुक छात्रों की संख्या अधिक थी।इसलिए प्रतियोगी परीक्षाओं के तर्ज पर वहां प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती थी।नालंदा विश्वविधालय में उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए विशाल शोध सामग्रीयुक्त पुस्तकालय थे।

**उदन्तपुरी विश्वविधालय**–जैन साहित्य के अनुसार पदमोदया राजा ने 2800 वर्ष पूर्व बिहारशरीफ शहर की नींव रखी। नाम दिया विशालपुरी। 1820 में जब कर्नल फ्रैंकलिन यहाँ आये, तब एक जैन पंडित ने इस शहर का प्राचीन नाम विशाखापुरा बताया था।बुकानन ने लिखा है कि बिहारशरिफ का एक विशाल किला (वर्तमान शिकला पर मुहल्ला) तीसरी चौथी शताब्दी में मगध राजा द्वारा बनाया गया था। बिहार शरीफ से 12 मील दक्षिण धोसरावा गांव से प्राप्त 9 वीं श्यशोवर्मनपुरा भी कहा जाता था जिसकी पहचान कर्निधम ने आधुनिक बिहार के रूप में की हैं ।

मगध के राजा गोपाल ने 755–770 के बीच यहां किले का निर्माण कराया। उनके उतराधिकारी राजा धर्मपाल ने इस किला परिसर के अन्दर उदन्तपुरी की स्थापना की थी, उसे उनके उत्तराधिकारी देवपला द्वितीय ने पुरा किया। इस विश्वविधालय में 1000 छात्रों के रहने एवं अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था थी। यहां बौद्धएवं वैदिक धर्म दर्शन सहित अनेक महत्वपूर्ण विषयों के अध्ययन की व्यवस्था थी।

1197–99 को बीच बख्तियार खिलजी ने 200 घुड़सवारी सैनिकों के साथ हमला कर इस किले एवं विश्वविधालय को तहस नहस कर दिया था। सिर मुढ़े पडितों एवं वि]ानों सहित सभी छात्रों की हत्या कर दी थी। बख्तियार खिल्जी के समकालीन इतिहासकार मीनहाज उस रिवाज लिखित पुस्तक तबकारी नासरीश से इस घटना की पुष्टि होती हैं। इस महाविनाश के बाद भी 1234 तक इस विश्वविधालय के प्रधान पंडित थे।रत्नाकर शांति तथा अंतिश जैसे प्रकाण्ड विद्वान एवं यशस्वी शिक्षक थे। यहाँ एक समृद्ध शाली पुस्तकालय भी मिट्टी का बहुत बड़ा टीला से दिखाई पड़ता है। किले की दिवारों के भगनावशेष मौजूद है तथा यत्र–तत्र बिखरे पुरावशेष, पत्थर की मूर्तियां, नक्काशीदार शिलाखण्ड, स्तूप आदि इसके गौरवशाली अतीत की गाथा सुनते लगते हैं। जमींदारी किले पर बिहारशरिफ शहर अवस्थित हैं। यहां अक्सर कई तरह की पुरातात्विक वस्तुएँ मिलती हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

**बुद्ध महावीर की भूमि –** नालंदा के इतिहास का आरंभ ईसा पूर्व छठी और पाँचवीं सदी से शुरू होता है। ये सदियों महावीर और बुद्ध के जन्म और जीवन से संबंध रखती है। जैन ग्रंथों के अनुसार राजगृह के प्रसिद्ध नगर के आस–पास क्षेत्रों के उत्तर–पश्चिमी भाग नालंदा कहलाता था। आम बोल चाल में यह स्थान श्बाहिरियाश के नाम से प्रसिद्ध था। यह स्थान इतने महत्व का था कि यहां महावीर तीर्थकर ने चौदह चौमासे बिताये। पाली बुद्ध प्राय यहां आते थे। यह स्थान उस समय बेहद समृद्ध विस्तार और धना आबादी था। इनमें पावारिक नाम का एक आमों का बाग भी था राजगृह से नालंदा का फासला एक योजना दिया गया है। राजगृह के पास एक दूसरा स्थान नाल था। महासुदस्सनजातक में लिखा है कि यह जगह बुद्ध के प्रमुख शिष्य ज्येष्ठ शारिपुत्र के जीवन की घटनाओं का केन्द्र था।परन्तु संस्कृत भाषा में रचित महावस्तु बौद्धग्रंथ में लिखा है कि नालंदा – ग्राम राजगृह से केवल आधा योजन दूर था और यह शारिपुत्र का जन्मस्थल था। इस उल्लेख का समर्थन तिब्बत के बौद्धसाहित्य में भी किया गया है। इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि नाल, नालक, नालकग्राम और नालंदा आदि शब्द एक ही स्थान के भिन्न–भिन्न नाम थे । हमारी सास्कृतिक धरोहरों में वैशाली का महत्वपूर्ण स्थान है। पटना विश्वविधालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ० योगेन्द्र मिश्रा यह लिखते है कि वैशाली का आर्थीकरण मगध से पहले हुआ। इसका विकास कृषि और वाणिज्य केन्द्र के रूप में हुआ। यहां शासन पद्धति के क्षेत्र में एक महान प्रयोग किया गया वनिज्यों अथवा लिच्छिवियों ने यहां गणतंत्र की स्थापना की जो विश्व का प्राचीनतम गणतंत्र हैं ईसा पूर्व छठी सदी एवं पांचवी सदी के आरम्भ में यहां एक धार्मिक क्रांति हुई जिसका प्रभाव दूर–दूर तक पड़ा। जैनो के 24वें तीर्थकर वर्तमान महावीर का जन्म यही क्षत्रिय कुंडपुर में हुआ था जो वैशाली के अति समीप का गाव कुड हैं। वज्जियों की राजधानी गौतम बुद्ध को अत्यंत प्रिय थी। वह यहां कई बार आये थे। वैशाली उस समय की राजनैतिक और धार्मिक चहल–पहल का केन्द्र था।

नालंदा विश्वविद्यालय के बाद बिहार के वैभव की विक्रमशिला को लेकर भी खूब प्रशंसा की जाती है। बिहार के सास्कृतिक धरोहरों में गया का विष्णुपद मंदिर भी हैं। यह मंदिर 18वीं सदी में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई द्वारा बनवाया गया था। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु का गयारह इंच लंबा चरण चिन्ह है। जिसकी पूजा विश्व के कोने–कोने से आने वाले तीर्थ यात्री करते हैं। वे इस में गया को सभी तीर्थों का प्राण कहा गया है। जैसे तीर्थों के गुरू पुष्कर तथा तीर्थों के राजा प्रयाग है। उसी तरह गया सभी तीर्थों के प्राण है। बोधगया का महाबोधी मंदिर भी हमारी सास्कृतिक धरोहर है। यहीं बोधी वृक्ष के नीचे तपस्यारत सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ती हुई थी और वे गौतम बुद्ध के नाम से विश्वविख्यात हुए।

**निष्कर्ष :** पिछले वर्षों से राज्य में पर्यटन के विकास पर अधिक बल दिया जा रहा हैं। इसके लिए विभिन्न दुरिस्ट सर्किट बनाकर पर्यटन सुविधाओं को उन्नत बनाया जा रहा है। अगर राज्य में विधि– व्यवस्था में प्रयाप्त सुधार लाया गया तो पर्यटन द्वारा बहुत हद तक प्रादेशिक विकास संभव हो सकेगा। वास्तव में पर्यटन बिहार के आर्थिक विकास की कुंजी है ।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा संजय कुमार (1998), पर्यटन और पर्यटन उत्पादन, नई दिल्ली, राक्षशिला प्रकाशन, पृ० सं० –2.
2. Batra, GS (1996, TOURISM IN THE 21 Century. New Delhi, Anmol Publications Private Limited. PL-
3. नेगी. जगमोहन (1999) पर्यटन एवं यात्रा के सि)ान्त नई दिल्ली तक्षशिला प्रकाशन पृ० सं०–31.
4. अहमद, इम्त्याज एवं अहसल, कमर (1998) बिहार एक परिचय पटना, नेशनल पब्लिकेशन, पृ० स०–33.
5. मिश्रा, विनय कुमार, बोधगया बना विदेशीयों का भ्रमण केन्द्र, दैनिक जागरण, एक समाचार पत्र पटना से निष्कासित, संदर्भ, 20 मार्च, 2010 पृ० सं० –5.
6. कुमार संतोष, जंतपुरी विश्वविधालय, दैनिक जागरण, वही, 23 मार्च, 2010.

*****